रात्रि क्लास 13/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चे जब यहाँ आकर बैठेते है तो बाप पूछते है, शिवबाबा को याद करते हो? फिर विश्व के बादशाही को याद करते हो? बेहद के बाप का नाम शिव है। फिर भाषा के कारण हरेक अपना2 नाम कहते है। जैसे बम्बई (में) बबूलनाथ कहते है। शिव का नाम रखा है बबूलनाथ; क्योंकि काँटों को फूल बनाते हैं। सतयुग में फूल। (य)हाँ सभी हैं काँटे। तो बाप बतलाते हैं कितना नाम दिये हैं। तो बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं, बेहद का बाप याद है? उनका नाम है शिव। वह है कल्याणकारी। जितना याद करेंगे उतना ही जन्म–जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। सतयुग में पाप होते ही नहीं। वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया। यह है पाप आत्माओं की दुनिया। ....प है 5 विकार। सतयुग में रावण होता ही नहीं। यह है सारी दुनिया का दुश्मन। सारी दुनिया रावण राज्य है। सभी दुःखी तमोप्रधान हैं। तब कहते हैं बच्चों मामेकं याद करो। यह गीता के अक्षर हैं। बाप खुद कहते है देह के सभी सम्बंध छोड़ मामेकं याद करो। पहले2 तुम सुख के संबन्ध में थे, फिर रावण के बंधन में आये हो। फिर अभी सुख के सम्बंध में आना है। अपन को आत्मा समझो यह शिक्षा बाप संगमयुग पर (दे)ते हैं। अपन को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो। बाप खुद कहते है मैं परमधाम का रहवासी हूँ। इस शरीर में प्रवेश किया है तुमको समझाने लिये। बाप कहते हैं पावन बनने बिगर तुम मेरे पास नहीं आ सकते हैं। अब पावन कैसे बनेंगे? सिर्फ मेरे को याद करो। भक्ति मार्ग में भी सिर्फ मेरी पूजा करते थे। उनको अव्यभिचारी .... कहा जाता है। अभी मैं पतित पावन हूँ। तो मुझे याद करो। तो तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे। 63 जन्मों के पाप हैं। सन्यासी कब राजयोग सिखा न सके। बाप ही सिखलाते हैं। वास्तव में सन्यासी निवृति मार्ग वाले हैं। उनको कोई भी पुस्तक आदि पढ़ने का हक नहीं है। शास्त्र, भक्ति आदि प्रवृत्ति मार्ग वालों (के) लिये हैं। वह तो जंगल में जाकर बैठते हैं और ब्रह्म को याद करते हैं। अभी बाप कहते हैं सर्व की सद्गति दाता मैं हूँ, इसलिये मुझे याद करो तो तुम यह बनेंगे। एमऑब्जेक्ट सामने है। जितना पढ़ेंगे पढ़ावेगे उतना ही पद दैवी राजधानी में पावेंगे। अलफ है एक बाप। रचना से रचना को वर्सा मिलता नहीं। यह है बेहद का (बाप) तो बेहद का वर्सा देते हैं। तुम स्वर्ग में सद्गति में होंगे। बाकी सभी आत्माएं चले जावेंगे। तो मुक्ति–जीवनमुक्ति, गति–सद्गति अक्षर ही हैं शांतिधाम–सुखधाम के। बाप की याद बिगर घर जा नहीं सकेंगे। आत्मा पवित्र जरूर बनना। यहाँ सभी हैं नास्तिक। बाप को नहीं जानते। तुम आस्तिक यहाँ बनते हो गायन है विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। अभी विनाश काल है ना। चक्र जरूर फिरना है। विनाश काले .....ीत बुद्धि है बाप के साथ जो उल्लू, पाजी, गधे में कह देते हैं इनको कहा जाता बिल्कुल विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति और जिनकी प्रीत बुद्धि है वह विजयन्ति अभी जितना बाप को याद करेंगे। बाप कितना ...ज कर सुनाते है; परन्तु माया रावण भुला देती है। अभी इस पुरानी दुनिया का अंत है। वह अमरलोक वहाँ ....ल होता नहीं। बाप को कहते है आओ साथ में हम सभी को ले चलो। तो काल ठहरा ना। सतयुग में इतना छोटा झाड़ है। अभी बहुत बड़ा झाड़ है। अब सतयुग में ऊँच पद पा सकेंगे। सिर्फ अलफ को याद करो। बे बादशाही तुम्हारी है। वर्सा तुम्हारा। वह है हद का वर्सा। यह है बेहद का वर्सा। दुःख की दुनिया अन्त, सुख की दुनिया आदि। इसमें कोई तकलीफ नहीं है।

ब्रह्मा और बिष्णु का आक्युपेशन क्या है। विष्णु को देवता कहते है। ब्रह्मा को तो कोई जेवर आदि हैं नहीं। वहाँ न ब्रह्मा, न बिष्णु, न शंकर है। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है। सूक्ष्म वतन का सिर्फ साक्षात्कार होता है। सूिल, सूक्ष्म, मूल है ना। सूक्ष्मवतन में है मूवी। यह समझने की बातें हैं। गीता पाठशाला है ना। जहाँ राजयोग सीखते हो। शिवबाबा पढ़ाते हैं तो जरूर शिवबाबा ही याद आवेंगे ना। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

शिवबाबा याद है? वर्सा याद है?